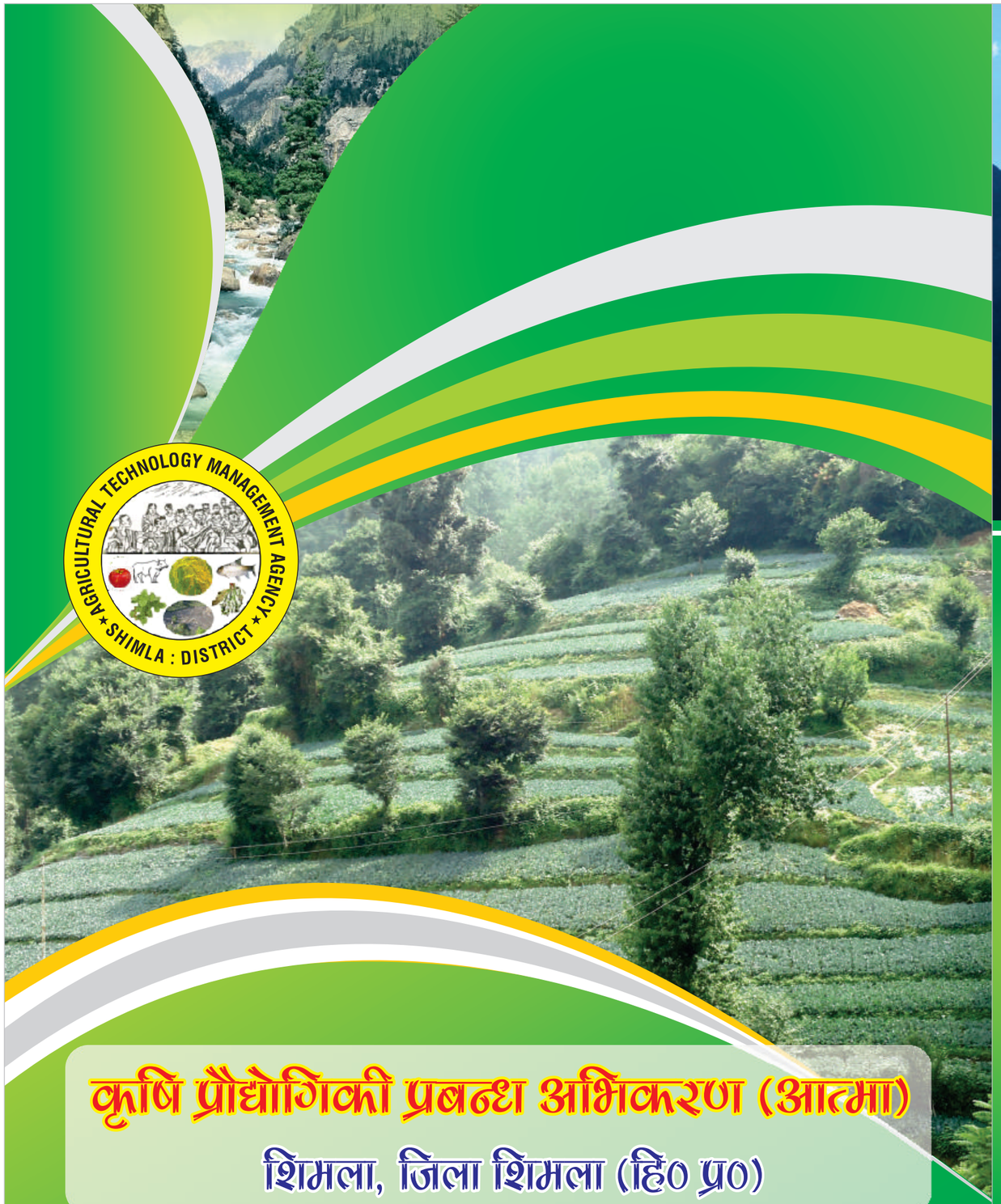

AGRICULTURAL TECHNOLOGY MANAGEMENT AGENCY
SHIMLA : DISTRICT

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण (आत्मा)

शिमला, जिला शिमला (हि० प्र०)

त्रैमासिक पत्रिका

आत्मा संदेश

जनवरी – 2016

AGRICULTURAL TECHNOLOGY MANAGEMENT AGENCY
SHIMLA : DISTRICT

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण (आत्मा)

शिमला, जिला शिमला (हि० प्र०)

उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश
DEPTT. OF HORTICULTURE (H.P)
PLANT PROTECTION
CENTRE BATHARA
उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश
OFFICE OF THE
URE DEVELOPMENT OFFICE
DEMONSTRTION ORCHA
RA SARAHAN

कृषि तकनीक एवं सूचना केन्द्र
यहाँ गाड़ी खड़ी न क

उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश
कार्यालय
अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण
धौलाकुआँ, जिला सिरमौर (हि.प्र.) 173 001

श्री दिनेश मल्हौत्रा
आई.ए.एस.
जिलाधीश शिमला
एवं अध्यक्ष आतमा,
जिला शिमला (हि.प्र.)

संदेश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ पर ज्यादातर आबादी कृषि पर निर्भर है। हिमाचल प्रदेश में अन्न उत्पादन, सेब उत्पादन, सब्जियों की खेती, दूध उत्पादन में शिमला जिला का विशेष योगदान रहा है। शिमला जिले के किसान पोलीहोउस में सब्जी उत्पादन द्धारा अच्छी आय प्राप्त कर रहे है। आत्मा परियोजना केंद्रीय एवं राज्य सरकार द्धारा एक योजना के रूप में चलायी जा रही है

जिला शिमला में इस परियोजना का शुभारम्भ **2005–06** में हुआ, तब से इस योजना के अतर्गत कृषको एवं बागबानी के विकास के लिए भिन्न भिन्न सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही है आत्मा शिमला द्धारा कृषि व कृषि से जुड़े अन्य विभागों की आधुनिक तकनीकी जानकारी सरल भाषा में आत्मा सन्देश के माध्यम से किसानों तक पहुचाई जा रही है ।

हिमाचल प्रदेश ,विशेषकर बेमोसमी सब्जियां उगाने व उत्तम सब्जी बीज उत्पादन के लिए जाना जाता है क्यूंकि यहाँ के बिभिन्न क्षेत्रो की जलवायु सभी प्रकार की सब्जियों एवं बीज उत्पादन के लिए अति उत्तम है । शिमला जिले के किसान जैविक खेती के द्धारा और पोलीहोउस में सब्जी उगाकर तथा उन्हें उचित मूल्य पर बेचकर अच्छा लाभ उठा रहे है ।

मुझे आशा है कि प्रस्तुत त्रेमासिक आत्मा सन्देश में संकलित की गई सामग्री न केवल कृषि ,बागबानी ,पशुपालन विभाग के प्रसार अधिकारियों के लिए उपयोगी होगी बल्कि शिमला जिला के किसानों को अधिक उत्पादन लेने में भी सहायक होगी ।

श्री दिनेश मल्होत्रा

फसल : - **अरबी**

बुआई का समय : – जून - जुलाई (असिंचित क्षेत्र)

बीज की मात्राः – 160kg/बीघा

फासला – 30 - 35 ग 20 - 30 सेंटी मीटर

5 - 6 सेंटी मीटर कंदों की गहराई

खेती की तैयारी के समय गोबर की खाद, सुपर फास्फेट,म्युरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा तथा कैन की अधिकतम मात्रा मिला दें तथा शेष कैन मिट्टी चढ़ाने के समय मिलाएं।

फसल की एक दो बार गुड़ाई करें तथा प्रत्येक निराई के बाद खुली हुई जड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें।

मल्चिंग : –

भूमि में सुधार लाने, तापमान बनाए रखने, भूमि का कटाव रोकने तथा उपयुक्त नमी बनाए रखने हेतु क्यारियों को हरी या सुखी पत्तियों या गोबर घास से ढ़क कर रखा जाता है । एक हैक्टेयर जमीन में 50 क्विंटल सूखे पत्ते या 125 क्विंटल हरे पत्तों की 3 - 5 से. मी. मोटी मल्च की तह बना दें । यदि मल्च सड़ जाए तो 40 दिन बाद दूसरी मल्च की तह लगाएं।

ध्यान रखने योग्य बातें: -

1. अदरक की तीसरी कतीर के बाद मक्की की एक कतार लगाएं । मक्की की फसल का प्रयोग अदरक के खेत में छाया देनें के लिए करें।

2. अवांछनीय व रोगी पौधों को निम्न अवस्थाओं पर निकालना आवश्यक है : -

फूलगोभी में

a.वनस्पतिक बढ़वार होने पर

b. फूल लगने पर

c. गोभी तैयार होने पर

d. फूलते समय

3. हरित गृह में माईट की रोकथाम : –

पहचान : – शिशु तथा वयस्क माईट पत्तियों से हरे रंग का पौधा रस चूसते हैं । जिसके कारण पत्तियों में हरा रंग धीमा पड़ जाता है। माईट से ग्रसित पौधों की पहचान दूर से की जा सकती है। पत्तों में हल्के पीले धब्बे होते हैं जो कि बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं ।

रोकथाम : –

हरित गृह में नमी बनाए रखें कयोंकि शुष्क वातावरण में माईट की बढ़ोतरी अधिक होती है। फैंजाइक्वीन (मैजिस्टर 1 ई. सी.) 25 मि. ली. प्रति 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।

4. भुमि और जलवायु के अनुकूल ही जातियों का चुनाव करें।

5. गोबर की खाद खूब अच्छी तरह से सड़ी होनी चाहिए।

6. बीज को धोने से पूर्व फफूंद नाशक दवाई से शोधित कर लें ।

7. रोगी तथा कीड़ों से ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें।

8. कीटनाशी तथा फुंद नाशी दवाईयों का घोल आवश्यक होने पर ही बनाएं । आपस में अनुकूलता के आधार पर दवाईयों को मिलाएं।

9. खेत की जुताई से पहले 8 – 10 क्विंटल प्रति कनाल गोबर की अच्छी सड़ी गली खाद खेत में अवश्य डालें । गोबर की खाद मिट्टी को मुरमुरा बनाती है तथा उसमें पानी रोकने की क्षमता बढ़ाती है। गोबर की खाद के अतिरिक्त अच्छा उत्पादन लेने के लिए रासायनिक खादों का प्रयोग करना अतिआवश्यक है।

नीचले पर्वतीय क्षेत्रः – टमाटर, बैंगन तथा मिर्ची की रोपाई करें । प्याज व फूलगोभी की रोपाई करें।

मध्यवर्ती क्षेत्र : –

1. मूली तथा शलगम की बिजाई करें।
2. टमाटर में फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए सेविन 200 ग्राम को 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
3. टमाटर तथा शिमला मिर्च में फल सड़क रोग की रोकथाम के लिए डायथेन एम् 45 या ब्लाईटोक्स 50 WP (38 ग्राम) का प्रति 100 लीटर पानी के हिसाब से 7 – 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

5. उच्च पर्वतीय क्षेत्र : – मूली तथा शलगम की बिजाई करें । गांठ गोभी की रोपाई करें । मक्की में गुडाई के समय खरपतवार निकाल लें तथा बिजाई से 40 – 50 दिनों के बाद मिट्टी चढाएं।

अगस्त

मध्यवर्ती क्षेत्र : – फासबीन की बुआई करें – बौनी किस्में जैसे प्रीमियम या बी. एल. बौनी – 1 की बुआई 45X15 सेटीमीटर पर करें ।

- पालक व मैथी की बिजाई करें।
- फूलगोभी, बंदगोभी व गोभिवर्गीय सब्जियों की पनीरी डालें।
- मटर – अरकल की बिजाई 30X75 सेटीमीटर की दूरी पर करें।

निचले पर्वतीय क्षेत्र –

- खरीफ प्याज की पनीरी डालें ।
- फूलगोभी की पनीरी डालें।
- बंदगोभी की पनीरी डालें ।
- गाजर की बिजाई करें।
- मटर अरकल की बिजाई करें।

उच्च क्षेत्र : –

मूली, शलगम, गाजर, पालक व लेहसुन की बिजाई करें।

सितम्बर

निचले क्षेत्रः – बंदगोभी व गांठगोभी की तैयार पनीरी की रोपाई करें।

- मूली, शलगम, मेथी व पालक की बिजाई करें।
- बैंगन की पनीरी तैयार करें।
- मटर की अगेती किस्मों की बिजाई करें।

उच्च क्षेत्र :– टमाटर शिमला मिर्च, फूलगोभी ,बंदगोभी का तुडान करें।

मध्यवर्तीय क्षेत्र :– फूलगोभी की पछेती किस्मों की पनीरी डालें।

- मटर की अगेती किस्मों की बिजाई करें।
- मटर में पछेता झुलसा रोग की रोकथाम के लिए डायथेन एम.-45(250 ग्राम/100लीटर) या ब्लाईटोक्स (300ग्राम/100लीटर) पानी का छिड़काव करें।

बागबानी

मधुमक्खी पालनः –

मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसें कम लागत में भूमिहीन किसान व युवा भी शुरू कर सकते हैं।

विशेषताएंः –

1. मधुमक्खी पालन व्यवसाय अपनाने के लिए कम से कम लागत व कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।
2. इसका पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव है। मक्खियां फूलों से रस व पराग एकत्रित करते समय पौधों की परागन क्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिससे फसलों की पैदावार में वृद्धि होती है।
3. यह किसी एक व्यक्ति या समूह द्वारा आरंभ किया जा सकता है।
4. बातार में शहद व मोम की मांग भारी मात्रा में है।
5. यह व्यवसाय शोकिया छोटे स्तर व बड़े स्तर पर अपनाया जा सकता है।
6. इसके प्रशिक्षण के लिए ज्यादा पढ़े लिखे होने की आवश्यकता नहीं है।

मधुमक्खी पालन का व्यवसाय कैसे शुरू करें

इसे शुरू करने से पहले मधुमक्खी पालन के बारे में पूर्ण जानकारी का होना आवश्यक है। यह जानकारी कृषि संबधित सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों में दी जाती है। मधुमक्खी पालन संबधित प्रशिक्षण शिविर कृषि विस्तार गतिविधियों के

अंतर्गत आते हैं। यह प्रोग्राम एक सप्ताह से दो माह तक के होते हैं। मधुमक्खियों के प्रबंधन शहद को इकट्ठा व संग्रहित करने के तरिकों, विभिन्न बिमारियों की जानकारी भी विशेष रूप से दी जाती है। मधुमक्खी पालन आरंभ करने के लिए कौनवंश व अन्य सामग्री सरकारी, पंजीकृत संस्थाओं व मधुमक्खी पालको से प्राप्त की जा सकती है। इसका आरंभ बसंत ऋतु के आने पर करना उपयुक्त होता है। इस व्यवसाय को हिमाचल सहित भारत के अन्य प्रदेशों में लाखों लोगों ने अपनाया नाम कमाया है। पहाड़ी क्षेत्रों में भारतीय मधुमक्खी को सफलता पूर्वकपाला जा सकता है।

पशुपालन

1. अपने क्षेत्रों की अनुकुलता के मद्दे नजर चारा पौधों – लुसीनिया, रूबिनिया, ब्यूल, कचनार, शहतूत, बांस इत्यादि का रोपण करें।

2. हरे चारे की उपलब्धता बढ़ाने के लिए बाजरा, मिन्नी घास, पैरा घास, सीटेरिया घास का रोपण करें।

3. पशुशालाओं में सफाई रखें एवं मलमूत्र व पानी की निकासी हेतु उचित प्रबंध करें ताकि पशुओं में बिमारियों से बचाव हो सके ।

4. जिन पशु पालकों के पशु प्रतिरोध टीकों सं वंचित रह गये उन सभी को वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व संक्रामक रोगों जैसे मुहखुर, गलघोंटू व लंगड़ा बुखार के बचाव हेतु टीके अवश्य लगवा लें।

कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश
कृषि पाठशाला (पशुपालन)

कृषि विज्ञान केन्द्र
FARM
SCIENCE
CENTRE